जन स्वास्थ्य अधिकारों का हनन (समुदाय का अनुभव) - अध्ययन रिपोर्ट

अध्य्याय - 1

प्रस्तावना

स्वास्थ्य, स्वस्थ जीवन और स्वास्थ्य सेवा बुनियादी मानव अधिकार है परन्तु वास्तविकता यह है कि हमारे देश और राज्य में इस मूल मानव अधिकार का उल्लंघन एक आम स्तिथि है. गाँव से शहर तक स्वास्थ्य की मुलभुत सुविधाओं की उपलब्धता में चिंताजनक आभाव व् असामानता देखने को मिलती है. इसके अलावा स्वास्थ्य का निजीकरण तेज रफ़्तार से हो रहा है जसके चलते स्वास्थ्य व्यवस्था से वंचित लोगो की संख्या में बहुत वृद्धि हो रही है. ग्रामीण व् शहरी क्षेत्र में गरीब वर्ग इलाज के लिए सरकारी अस्पताल जाते है क्यूंकि यहीं उनको मुफ्त इलाज दिए जाने की सुविधा है.

सरकार के दवारा एक अच्छी स्वास्थ्य व्यवस्था को स्थापित करने के लिए केंद्र व् राज्य स्तर पर बहुत सी महत्वपूर्ण योजनाएं बनायीं जा रही है लेकिन इनके क्रियान्वयन में ढांचागत कमियों व् इच्छाशक्ति के आभाव में इन योजनाओं का लाभ जरुरतमंदो को नहीं मिल पा रहा है. आज भी राज्य के सरकारी अस्पतालों में डॉक्टर, नर्स, तकनीकी कर्मचारियों जैसे लैब टेक्नीशियन, सोनोग्राफी, सिटी स्केन आदि के जानकार दवाइयां व् इंजेक्शनों की कमी है. जिसकी वजह से स्वास्थ्य सुविधा आज भी गरीब तबके के पहुँच के बाहर है.

स्वास्थ्य सुविधाओं की इन कमियों का सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव मातृत्व स्वास्थ्य पर पढ़ रहा है. आज भी राज्य में 2011-13(SRS)के अनुसार मातृ मृत्यु दर 221 व् शिशु मृत्यु दर 43 है. राज्य में 31.5% कुपोषित बच्चे है जो की पहले से कम हुए है.

छत्तीसगढ़ राज्य में जन स्वास्थ्य व्यवस्था में सुधार लाने के लिए “जनता का स्वास्थ्य - जनता के हाथ” की सोच पर आधारित मितानिन कार्यक्रम की शुरुवात वर्ष 2002 में की गयी. इस कार्यकर्म में समुदाय की वास्तविक सहभागिता के साथ सभी के लिए स्वास्थ्य का लक्ष्य आसानी से प्राप्त करने की आशा की गयी. मितानिन कार्यक्रम के तहत प्रत्येक पारा-मोहल्ले में एक समुदाय के दवारा एक मितानिन का चयन किया गया जो की अपने पारा के लोगो के स्वास्थ्य की सुरक्षा, जागरूकता व् जन स्वास्थ्य से जुड़े अधिकारों को प्राप्त करने में उनकी मदद करती है. एक ओर जहाँ गत 14 वर्षो में मितानिन के प्रयास से संस्थागत प्रसव, टीकाकरण, मोतियाबिंद का उपचार, टी.बी. की पहचान व् उपचार आदि में परिवर्तन आया है, लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो रहे है और अस्पताल में इलाज के लिए जा रहे है, वहीं दूसरी ओर सरकारी अस्पताल में दी जा रही सेवा का निम्न स्तर, अस्पताल के कर्मचारियों का मरीजो के प्रति अपमानजनक व्यवहार, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, इलाज़ के सामान और स्टाफ की कमी के कारण हितग्राहियों को स्वास्थ्य सुविधा प्राप्त करने में अनेक तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है. आमजन को सरकारी और निजी स्वास्थ्य केन्द्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं को पाने में किन-किन तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है इसे समझने और इन समस्याओं का जन स्तर और शासकीय स्तर पर समाधान निकलने के लिए यह अध्ययन किया गया है.

अध्ययन का उद्देश्य -

अ. सरकरी स्वास्थ्य व्यवस्था के अंतर्गत दी जा रही सेवाओं के प्रति हितग्राहियों के अनुभव का पता लगाना.

ब. सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था के प्रति लोगो की अपेक्षाओं को जानना.

स. सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था की कमियों को पहचान कर जमीन स्तर से लेकर जिला स्तर तक सुधार की रणनीति बनाना.

ब. स्वास्थ्य अधिकारों के हनन की ग्राम से लेकर राज्य स्तर की सरकारी ढांचागत स्तिथि का आंकलन करना.

द. हितग्राहियों के अनुभवों या व्यक्तिक अध्ययनों के आधार पर स्वास्थ्य व्यवस्था के संचालन में जो भी कमियां है उसे पहचान कर, समझ कर सम्बंधित विभाग से चर्चा कर उन्हें दूर करने का प्रयास करना.

अध्ययन पद्धति - मितानिनो, मितानिन प्रशिक्षको एवं स्वस्थ पंचायत समन्वयकों के दवारा ग्रामीण क्षेत्र व् शहरी क्षेत्र में परिवार भ्रमण, vhsnc बैठकों, संकुल बैठक व महिला आरोग्य समिति की बैठकों के दौरान हितग्राहियों के साथ सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था या तंत्र के दवरा किया जा रहे दुर्व्यवहार, लापरवाही, अवैध वसूली संबंधी केस स्टडी(व्यक्तिक अध्ययन) का संकलन किया गया है.

अध्ययन काल - अगस्त से दिसंबर 2016

अध्याय -2

अध्ययन रिपोर्ट के प्रमुख बिंदु

1. मातृत्व स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जिला, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एवं उप स्वास्थ्य केंद्र में लापरवाही, दुर्व्यवहार, अवैध वसूली संबंधी प्रकरणों का अध्ययन. (102,108 व् जननी शिशु सुरक्षा योजना)
2. स्वास्थ्य संबंधी अन्य रोगों के मरीजो के इलाज में शासकीय स्वास्थ्य केन्द्रों में की गयी लापरवाही, दुर्व्यवहार, अवैध वसूली संबंधी प्रकरणों का अध्ययन.
3. स्वास्थ्य के सम्बन्ध में निजी अस्पतालों के दवारा मरीजो के साथ किये जा रहे दुर्व्यवहार

अध्याय - 3 अध्ययन परिणाम

यह अध्ययन राज्य के 26 जिलो के शासकीय और निजी स्वास्थ्य केन्द्रों में किया गया है जहाँ लोगों को स्वास्थ्य सुविधाओं को प्राप्त करने में अनेक तरह समस्याओं का सामना पड़ा. इस अध्ययन के अंतर्गत संकलित जानकारी इस प्रकार है.

1. Facility wise table सुविधा अनुसार सारिणी

इस सारिणी में विभिन्न स्तर की शासकीय और निजी स्वास्थ्य केन्द्रों का विवरण है जहाँ लोगो के स्वास्थ्य अधिकारों के प्रति लापरवाही की गयी है

S.N.क्र.	Name of Facility सुविधा केंद्र का नाम	प्रकरणों की संख्या	%
1	Medical College मेडिकल कालेज	41	11%
2	District Hospital जिला अस्पताल	112	31%
3	Civil Hospital सिविल अस्पताल	7	2%
4	CHC सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र	165	45%
5	PHC प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र	64	17%
6	SHC उप स्वास्थ्य केंद्र	58	16%
7	Camp शिविर	1	0%
8	Private Hospital निजी अस्पताल	43	12%
Total कुल		**367**	**100%**

इस तालिका से यह स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य अधिकारों के हनन संबंधी कुल 367 केस स्टडी का संकलन किया गया है. संकलित केस स्टडी में सबसे अधिक 165 केस स्टडी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की है जो की कुल केस स्टडी का 45% है. 112 केस स्टडी का संकलन जिला अस्पताल से किया गया है. संकलित केस स्टडी में सबसे कम केस स्टडी 1 शिविर से संबंधी है एवं 7 सिविल अस्पताल से संबंधी है जो की कुल केस स्टडी का 2 % है. यह अर्थात से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक स्वास्थ्य अधिकारों का हनन स्सौदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में हुआ है.

2. Disease wise tabale बीमारी अनुसार सारिणी

इस सारिणी में उन रोगों को दर्शाया गया है जिनके रोगियों को सरकारी व् निजी स्वास्थ्य केन्द्रों में स्वास्थ्य सुविधा प्राप्त करने में समस्याओं का सामना करना पड़ा.

क्र.	**Name of Disease बीमारी का नाम**	**No.of cases प्रकरण की संख्या**	**%**
1	Delivery प्रसव	272	74%
2	ANC प्रसव पूर्व जाँच	25	7%
3	Family Planning परिवार नियोजन	9	2%
4	IUCD आई.यू.सी.डी.	4	1%
5	Newborn नवजात	50	14%
6	Childhood Disease बच्चों में होने वाली बीमारियाँ	18	5%
7	Adult-Communicable Disease संचारी रोग-वयस्कों में	7	2%
8	Adult-Non-Communicable Diseases गैर संचारी रोग-व्यस्को में	28	8%
Total		**367**	100%

इस सारिणी से यह स्पष्ट है कि प्रसव सम्बन्धि 272 मरीजों का जो की कुल केस स्टडी का 74 % के अधिकारों का सबसे अधिक हनन हुआ है. 50 नवजात रोगी एवं 25 प्रसव पूर्व की जाने वाली जाँच के मरीजो के इलाज में लापरवाही की दी गयी. सबसे कम केस स्टडी संचारी रोगों के मरीजो के साथ इलाज में लापरवाही की गयी है. जिन अस्पतालों में अस्पताल कर्मचारियों को ज्यादा सेवा व् सुविधा देने का काम करना पड़ता है उनके इलाज मे लापरवाही की गयी है.

3. Problem wise Table समस्यानुसार सारिणी

S.N.क्र.	समस्या	Type of Problems faced in hospitalअस्पताल में होने वाली समस्या	No.of प्रकरण cases
1	Negligence by staff कर्मचारियों के दवारा लापरवाही	Negligence लापरवाही	117
2		Refer due to fear डर के कारण रेफर	1
3		Wrong information given गलत जानकारी देना	15
4	Poor service provided by hospital अस्पताल में अच्छी सेवा नहीं दिया जाना	Service not received स्वास्थ्य सुविधा नहीं मिलाना	109
5		Delay in Service स्वास्थ्य सुविधा में देरी	33
6		Doctor/Nurse not available डॉक्टर/नर्स नहीं होना	0
7	Illegally asking for money गैरकानूनी रूप से पैसो की मांग	Money Demand पैसों की मांग	5
8		Money taken पैसे लिए गए	47
9		Cutting unnecessary amount Rsby card RSBY से अनावश्यक पैसे काटना	1
10	Poor transport facility provided by health facility स्वास्थ्य केंद्र के दवारा वाहन सबंधी अच्छी सुविधा उपलब्ध न किया जाना	Transportation facility not available from home/ Place वाहन की सुविधा घर/अन्य स्थान से उपलब्ध न होना	23
11		Transportation came to the house, but not taken to hospital वाहन घर तक आना परन्तु अस्पताल नहीं ले जाना	1
12		Govt. Transportation Delay in service सरकारी वाहनों के दवरा सुविधा में देरी	4
13		Inter-facility Transportation not available एक अस्पताल से दुसरे अस्पताल ले जाने की सुविधा न मिलना	4
14		108 by the technician moved forcefully private hospital108 के कर्मचारी दवारा मरीज़ को जबरदस्ती निजी अस्पताल ले जाने संबंधी	1
15		Demand money by Govt transport providerशासकीय वाहन चालक के	6

		दवारा पैसे की मांग	
16		money taken by Govt transport providerशासकीय वाहन उपलब्ध कराने वाले के दवारा पैसे लिया जाना	9
17	Purchasing drugs etc from out side hospital अस्पताल के बाहर से दवा आदि खरीद्वाना	Purchese Drug / Material from out side बाहर से दवा/सामग्री मंगवाना	27
18	Behaviour related issue of health staff स्वास्थ्य कर्मचारियों के व्यवहार से संबंधी प्रकरण	Mis-behave by Medicale College hospital staffमेडिकल काले अस्पताल के कर्मचारियों दवारा बुरा व्यवहार करना	12
19		Mis-behave by Distt hospital staff जिला अस्पताल के कर्मचारियों दवारा बुरा व्यवहार किया जाना	35
20		Mis-behave by Civil Hospital staff सिविल अस्पताल के कर्मचारियों के दवारा बुरा व्यवहार किया जाना	2
21		Mis-behave by CHC staff chc कर्मचारियों के दवारा गलत व्यवहार	45
22		Mis-behave by PHC staff PHC के कर्मचारियों दवारा गलत व्यवहार	13
23		Mis-behave by SC staff उप स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों दवारा गलत व्यवहार	14
25		Mis-behave by Govt transport providerशासकीय वाहन सेवा उपलब्ध कराने वाले के दवारा गलत व्यवहार	16
26	Multiple Referral एक से ज्यादा बार रेफर	Multiple Referral एक से ज्यादा बार रेफर किया जाने संबंधी	75
27		Refer to private hospital निजी अस्पताल में रेफर किये जाने संबंधी	16
28		Refer to private Lab निजी पैथोलोजी लैब में जाँच के लिए रेफर किये जाने सम्बन्धि	9
Total कुल			**367**

इस सारिणी से यह स्पष्ट होता है कि कुल 367 प्रकरणों में सबसे अधिक 117 प्रकरणों में अस्पताल कर्मचारियों के दवारा मरीज के इलाज में लापरवाही की गयी और 109 प्रकरणों में तो मरीज को स्वास्थ्य सेवा ही नहीं दी गयी. 47 प्रकरण ऐसे है जिसमें मरीजो से गैरकानूनी रूप से अस्पताल कर्मचारियों के दवारा पैसे लिए गए एवं सामदायिक स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र व् उप स्वास्थ्य केंद्र में क्रमशः 45,13 व् 14 में कर्मचारियों के दवारा मरीज के साथ बुरा व्यवहार किया गया. इसके साथ ही साथ 75 मरीजो को इलाज के लिए एक से ज्यादा बार रेफर किया गया. संकलित केस स्टडी में सबसे कम केवल 1 प्रकरण RSBY के तहत मरीज से इलाज के नाम पर ज्यादा पैसा काटा गया.

4. Type of Death मृत्यु का प्रकार

S.N.क्र.	Type of Death मृत्यु का प्रकार	No.of cases	%
1	Child Death बाल मृत्यु	5	1.4%
2	Still Birth मृत जन्म	12	3.3%
3	Maternal Death मातृत्व	24	6.5%
4	Newborn Death नवजात मृत्यु	51	13.9%
Total कुल प्राप्त केस स्टडी		**367**	100%

इस सारिणी से यह स्पष्ट होता है कि अस्पताल में लापरवाही व् इलाज में कमी की वजह से कुल 367 में 92 प्रकरणों की मृत्यु हुयी है. जिसमें सबसे अधिक 51 नवजात बच्चो एवं 24 माताओं की प्रसव के दौरान मृत्यु हुयी है जो कि कुल प्रकरणों का क्रमशः 13.9% व् 6.5% है. इसके साथ ही साथ अस्पातल कर्मियों की लापरवाही व् समय पर इलाज नहीं किये जाने की वजह से 12 मृत बच्चे जन्म लेने की जानकारी इस तालिका से मिलती है.

1.Maternal मातृत्व

यह सारिणी मातृत्व स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रकरणों का विश्लेषण है जिनकी संख्या 347 है. इस अध्ययन से यह पता चलता है की शासन के दवारा मातृत्व सुरक्षा के लिए बहुत सारे प्रयास किये जा रहे है बहुत सी योजनाएं बनायीं गयी है और जा रही है परन्तु यह अध्ययन यह भी दर्शाता है की सबसे अधिक स्वास्थ्य अधिकारों का हनन मातृत्व स्वास्थ्य के मरीजों का ही हो रहा है. जिससे सम्बंधित आकड़े इस प्रकार है-

1. मातृत्व स्वास्थ्य समस्या

क्र.	Name of Disease समस्या	No.of cases	%
1	Delivery प्रसव	272	78%
2	ANC प्रसव पूर्व जांच	25	7%
3	Newborn नवजात	50	14%
Total कुल		**347**	100%

इस सारिणी में मुख्य रूप से अस्पताल में मातृत्व स्वास्थ्य के सम्बन्ध हुए स्वास्थ्य अधिकारों के हनन की जानकारी मिलती है जिसमे यह स्पष्ट है कि शासकीय अस्पतालों में सबसे अधिक 272 प्रसव के प्रकरणों जो की कुल प्रकरणों का 78% है के में इलाज में लापरवाही की गयी है. इसके साथ ही साथ नवजात सम्बन्धि 50 व् प्रसव पूर्व जाँच के 25 हितग्राहियों के स्वास्थ्य अधिकार का हनन किया गया है जो की कुल प्रकरणों का क्रमशः 14% व् 7% है.

नवजात संबंधी केस स्टडी

1. ग्राम - दुर्गीटोला, विकासखंड - डौंडी लोहारा, जिला - बालोद

सुखिया ने डौंडी लोहारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में सामान्य तरीके से एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया . जन्म के 12 घंटे बाद बच्चे को बी. सी. जी. का टीका लगाया गया. टीका लगने के बाद बच्चे को बुखार आया और बच्चे ने दूध पीना छोड़ दिया. घरवालो ने डॉक्टर को 3-4 बार दिखाया तो डॉक्टर ने यही कहा कि टीका लगने से ऐसा ही होता है. 10 घंटे बाद फिर से डॉक्टर को दिखाया गया तो फिर डॉक्टर ने वही जवाब दिया और राजनांदगांव जिला अस्पताल रेफर कर दिया. राजनांदगांव जिला अस्पताल में बच्चे को एस.एन.सी.यु. में रखा गया. यहाँ बच्चे को 3-4 दिन तक रखे न दूध पिलाने देते थे न ही देखने, बच्चा कैसा है पूछने पर कहते थे सीरियस है. इस बीच बहार से दवाई मंगवाते गए और परिवार वाले देते गए. एक दिन डॉक्टर ने परिवार वालो से रायपुर लेजाने की बात की, परिवार वाले तैयार भी हो गए. परिवार वालो ने सारी व्यवस्था कर ली. 108 गाड़ी वाले ने 2800 राजनंदगांव से रायपुर लेजाने के मांगे. इसी बीच डॉक्टर आए और परिवार वालो को बुला कर बच्चे को दिखाए और कहा कि बच्चे के मुंह और नाक से खून निकल रहा है अब 5-10 मिनट का समय है मै रायपुर की पर्ची बना देता हूँ कहकर डॉक्टर चला गया. और बच्चे ने दम तोड़ दिया.

Type of facility visited जिन संस्थाओं में इलाज के लिए गए

S.N.	Name of Facility	No.of cases	%
1	Medical College मेडिकल कालेज	44	13%
2	District Hospital जिला अस्पताल	120	35%
3	Civil Hospital सिविल अस्पताल	8	2%
4	CHC सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र	158	46%
5	PHC प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र	73	21%
6	SHC उप स्वास्थ्य केंद्र	59	17%
Total कुल		**347**	100%

इस तालिका से यह स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक 158 मरीज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में इलाज के लिए गए जो कि कुल प्रकरण का 46% है. 120 मरीज जिला अस्पताल जो की कुल प्रकरण का 35% है. सिविल अस्पताल से सबसे कम 8 मरीज इलाज के लिए गए थे जहा उनके स्वास्थ्य अधिकारों का हनन हुआ था.

समस्या अनुसार जानकारी Problem wise Table

S.N.क्र.	Type of Problems faced in hospital अस्पताल में जिन समस्याओं का सामना किया गया.	प्रकरणों की संख्या No.of cases	%
1	Service not received सेवा नहीं प्राप्त हुयी	104	30%
2	Negligence लापरवाही	118	34%
3	Refer due to fear डर कारण रेफर किया गया	2	1%
4	Wrong information given गलत जानकारी दी गई	14	4%
5	Delay in Service सुविधा में देरी	36	10%
6	Doctor/Nurse not available डॉक्टर/नर्स उपलब्ध नहीं होना	0	0%
7	Money Demand पैसे की मांग	5	1%
8	Money taken पैसे लिए गए	44	13%
9	Cutting unnecessary amount Rsby card अनावश्यक रूप से आर.एस.बी वे. से पैसे काटना	1	0%
10	Purchese Drug / Material from out side दवा/इलाज की सामग्री बाहर से खरीद्वाना	23	7%
11	Transportation facility not available from home/ Place घर से संस्था तक वाहन की सुविधा नहीं मिलना.	21	6%
12	Transportation came to the house, but not taken to hospital वाहन घर तक आई परन्तु अस्पताल नहीं ले कर गयी.	2	1%
13	Govt. Transportation Delay in service सरकारी वाहन दवारा सेवा में देरी	7	2%
14	Inter-facility Transportation not availableएक स्थान से दुसरे स्थान जाने के लिए वाहन की सुविधा उपलब्ध नहीं होना	4	1%
15	108 by the technician moved forcefully private hospital 108 के टेक्नीशियन के दवारा जबरदस्ती निजी अस्पताल ले जाया गया	0	0%

16	Demand money by Govt transport provider शासकीय गाड़ी उपलब्ध कराने वाले दवारा पैसे की मांग की गयी	6	2%
17	money taken by Govt transport providerशासकीय वाहन उपलब्ध करने वाले के दवारा पैसे लिए गए.	8	2%
18	Mis-behave by Medicale College hospital staff मेडिकल कालेज कर्मचारी दवारा दुर्व्यवहार किया गया.	14	4%
19	Mis-behave by Distt hospital staff जिला अस्पताल में कर्मचारियों दवारा दुर्व्यवहार	32	9%
20	Mis-behave by Civil Hospital staff सिविल अस्पताल में कर्मचारियों दवरा दुर्व्यवहार	1	0%
21	Mis-behave by CHC staff सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों के दवारा दुर्व्यवहार	38	11%
22	Mis-behave by PHC staff प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों दवारा दुर्व्यवहार	14	4%
23	Mis-behave by SC staffउपस्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारीय दवरा दुर्व्यवहार	9	3%
25	Mis-behave by Govt transport provider शासकीय वाहन चालक दवारा दुर्व्यवहार	15	4%
26	Multiple Referral एक से ज्यादा बार रेफर	86	25%
27	Refer to private hospital निजी अस्पताल में रेफर करना	20	6%
28	Refer to private Lab निजी लैब में रेफर करना	9	3%
Total कुल		**347**	100%

इस सारिणी से यह पता चलता है कि मातृत्व स्वास्थ्य के कुल 347 प्रकरणों में सबसे अधिक 118 प्रकरण इलाज में लापरवाही के है जो की कुल प्रकरणों का 34% है, जिनमें मुख्य रूप से प्रसव के मरीज को समय पर इलाज व् देखभाल नहीं किये जाने की वजह से समस्याओं का सामना करना पड़ा. 104 प्रकरणों में मरीज को सेवा ही नहीं प्राप्त हुई. इस प्रकरणों में बहुत से प्रकरण ऐसे थे जिनमें गर्भवती दर्द से तड़पती रही और नर्स के दवारा अभी समय नहीं हुआ है कहकर समय पर सेवा नहीं दी गयी जिस वजह से जच्चा और बच्चा संबंधी बहुत प्रकरण हुए है. 86 प्रकरण एक से ज्यादा रेफर के है जिसमे गर्भवती महिला को अनावश्यक कारणों की वजह से एक अस्पताल से दुसरे अस्पताल रेफर किया गया है, 38 प्रकरण जो की कुल प्रकरणों का 11% है में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों दवारा गर्भवती के साथ दुर्व्यवहार किया गया है जिसमें से कुछ प्रकरणों में गर्भवती व् घर वालो के साथ

गाली- गलोच व् मारने की घटनाए सामने आई है. इसके साथ ही साथ 40 प्रकरण जो की कुल प्रकरणों का 13% है में प्रसूता से मिठाई खाने के नाम पर पैसा लेने की घटनाएँ हुयी है.

अस्पताल में प्रसव के मरीजो से मिठाई के नाम पर पैसे लिए जाने सम्बन्धि केस स्टडी

1. पंचायत - धुवाकारी, विकासखंड - मस्तुरी, जिला - बिलासपुर

दिनांक 6.11.16 को मितानिन उर्मिला भारदवज दवारा लक्ष्मीन यादव पति राम लखन को प्रसव हेतु 12 बजे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पचपेड़ी ले कर गयी. पी.एच.सी. में उस समय नर्स नहीं थी तो नर्स को बुलाने गए . नर्स 30 मिनट बाद आई और लक्ष्मीन की जाँच की और बताया कि 4 बजे तक प्रसव होगा. नर्स ने परिवार वालो को दास्ताने और इंजेक्शन बाहर से खरीद कर लाने के लिए लिखकर दिया. नर्स ने जो सामन मंगवाया था वह जरुरत से ज्यादा था. सामन लाने के बाद नर्स ने प्रसव करवाया और परिवार वालो से 1000 रुपए की मांग की. मितानिन ने नर्स से जब कहा कि यहाँ तो पैसा नहीं लगता है और ये गरीब परिवार है तो नर्स गुस्सा हो गयी. परिवार वालो मजबूरीवश नर्स को 500 रुपए दिए तो नर्स ने उसे फेंक दिया और 1000 रुपए लेकर ही मानी. इस घटना से गाँव वाले संस्थागत प्रसव के लिए नहीं आना चाहते जिससे मितानिन को अभूत परेशानी हो रही है.

राम कृष्ण पटेल
स्वस्थ पंचायत समन्वयक

स्वास्थ्य सेवा में लापरवाही संबंधी केस स्टडी

1. ग्राम - डुगाडूत्मा, पंचायत - डुगाडूत्मा. विकासखंड - नगरी, जिला - धमतरी

गाँव की टिकेश्वरी पति दीपक साहू उम्र 26 वर्ष को तीन साल बाद दूसरा प्रसव होने वाला था. टिकेश्वरी की उपस्वास्थ्य केंद्र और सामुदायिक स्वास्स्थ्य केंद्र में सभी जाँच समय पर हुयी थी. दिनांक 26.10.16 को रत के 1 बजे टिकेश्वरी को हल्का सा दर्द उठा तो वह देर रात होने के कारण किसी को नहीं बतायी. सुबह 5 बजे फिर से जब दर्द उठा घरवालो दवारा मितानिन रुख्मणि को बुलाया गया. मितानिन ने 102 गाड़ी को बुलवाया. 102 गाड़ी सुबह 6 बजे पहुंची तो टिकेश्वरी को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नगरी ले जाया गया. सी.एच.सी. में डॉक्टर मरीजो को देखकर वापस अपने घर जा रहे थे तो उन्होंने ए.एन.एम्. से टिकेश्वरी को देखने के लिए बोला. 8 बजे डॉक्टर ने टिकेश्वरी को देखा तब टिकेश्वरी सामान्य थी. 9-10 बजे के बीच टिकेश्वरी का पानी जाना चालू हुआ तो डॉक्टर और ए.एन.एम् ने फिर से टिकेश्वरी की जाँच की और बताया कि कुछ समय बाद प्रसव हो जाएगा. उसी समय टिकेश्वरी ने मितानिन से कहा कि उसके शरीर में ताकत नहीं लग रही है तो मितानिन ने उसे चाय और बिस्किट खिलायी थी.

कुछ समय बाद गन्दा पानी बहने लगा तो मितानिन ने ए.एन.एम्. को इस बात की जानकारी दी. गंदे पानी की सफाई की गयी और परिवार वालो को प्रसव हो जाएगा इस बात का दिलासा दिया गया. लगभग 2 बजे के आसपास डॉक्टर दवारा प्रसव यहाँ नहीं हो पाएगा कहकर धमतरी जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया एवं स्टाफ दवारा 108 गाड़ी की व्यवस्था की गयी. 108 गाड़ी वाले ने तैयार हो कर आने में 1 घंटे लगा दिए. टिकेश्वरी को 3 बजे धमतरी ले जाने के लिए 108 आई और टिकेश्वरी को गाड़ी में बैठने में किसी भी कर्मचारी ने मदद नहीं की. 108 गाड़ी में टिकेश्वरी के आलावा दो अन्य लोगो को और बिठाया गया था. मितानिन ने टिकेश्वरी के घरवालो को भी गाड़ी में बिठाने के लिए बहुत निवेदन किया तो 108 गाड़ी वाले ने चायपानी की व्यवस्था के एवज में गाड़ी में बिठाने के लिए तैयार हुआ. नगरी से धमतरी 65 किलोमीटर दुरी पर है. रास्ते में टिकेश्वरी ने मितानिन से कहा कि मुझे छाती में दर्द हो रहा है और साँस लेने में भी तकलीफ हो रही है. मितानिन ने गाड़ी में बैठी नर्स को बताया तो उसने गाड़ी रोककर टिकेश्वरी का इलाज किया. लगभग 4 बजे धमतरी अस्पताल पहुंचे तो तत्काल टिकेश्वरी का इलाज चालू किया गया और 5 मिनट बाद टिकेश्वरी की मृत्यु हो गयी. धमतरी की डॉक्टर हिना ने बताया की मरीज की मृत्यु देर से रेफर करने एवं बच्चा दानी फटने के कारण हुयी है.

नेमुचंद साहू - ब्लाक समन्वयक

Type of Death मृत्यु का प्रकार

S.N.क्र.	Type of Death मृत्यु का प्रकार	No.of cases	%
1	Child Death बच्चे की मृत्यु	1	0%
2	Still Birth मृत जन्म	12	3%
3	Mothers Death माँ की मृत्यु	23	7%
4	Newborn Death नवजात मृत्यु	51	15%
Total कुल		**347**	100%

मातृत्व सेवा संबंधी 347 प्रकरणों में अस्पताल में मरीजो के इलाज में की गयी लापरवाही के कारण 87 मरीजो की मृत्यु हई है. जिनमे सबसे अधिक 51 प्रकरण नवजात मृत्यु के है जो कि कुल प्रकरणों का 15% है, 23 प्रकरण माता मृत्यु व् 12 प्रकरणों में मृत बच्चे का जन्म होने की जानकारी मिलती है.

माता मृत्यु संबंधी केस स्टडी

ग्राम - चंदली, विकासखंड - पथरिया, जिला - मुंगेली

प्रेम कुमारी पति रामचंद को शाम 6 बजे से प्रसव दर्द शुरू हुआ था और परिवार वाले मितानिन को रात 11 बजकर 30 मिनट पर बुलाने गए. मितानिन ने 102 गाड़ी से महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पथरिया ले कर गयी. सी.एच.सी. में बताया गया की बच्चा फँस गया है और ऑपरेशन की सुविधा नहीं है इसलिए सिम्स बिलासपुर रेफर कर रहे है. सिम्स पहुँचने के बाद 3 घंटे तक प्रेमकुमारी का कोई इलाज नहीं किया गया और फिर एक मृत बच्चे का जन्म हुआ. माँ को बिस्तर खाली नहीं है कह कर ज़मीन पर लिटा दिया गया. मितानिन ने पहले से भर्ती एक प्रसव वाली माता से प्रेमकुमारी को साथ में सुलाने की विनती की और उस महिला ने प्रेमकुमारी को अपने साथ सुला लिया. प्रेमकुमारी का बहुत खून बह रहा था, मितानिन बार-बार जा कर डॉक्टर और नर्स को बता रही थी पर वे लोग बिलकुल धयान नहीं दिए. प्रेमकुमारी को ठण्ड भी बहुत लग रही थी परन्तु न उसे कोई दवाई दी गयी न ही इंजेक्शन लगाया गया. मितानिन ने परिवार वालो से प्रेमकुमारी को दाल, रोटी और सब्जी खिलाने को कहा और उसके पति ने जैसे ही खाना लाने के लिए जाने लगे तभी प्रेमकुमारी की मृत्यु हो गयी.-सरोजिनी वर्मा

1. ग्राम - डभरा, विकासखंड - खरसिया, जिला - रायगढ़

गर्भवती का यह दूसरा बच्चा होने वाला था. पहला बच्चा साढ़े 5 साल का है. गर्भवती ने गर्भावस्था के दौरान प्राइवेट डॉक्टर के पास हर माह जाँच करवायी थी और खतरे के कोई लक्षण नहीं थे, सब जाँच रिपोर्ट नार्मल थी. प्रसव पीड़ा रात 7-8 बजे के बीच शुरू हुयी तो 102 गाड़ी से महिला को पहले उपस्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया परन्तु ए.एन.एम्. ने तुरंत सिविल अस्पताल रेफर कर दिया. सिविल अस्पताल करीब 11:30 से 12 बजे के बीच पहुचें. सिविल अस्पताल में महिला डॉक्टर को बुलाया गया परन्तु 2 घंटे बाद वह 2 बजे आयी और आते ही महिला को रायगढ़ ले जाओ कह दिया. महिला के परिवार वालो ने डॉक्टर से बहुत प्रार्थना की कि एक बार आप मरीज को देख लीजिये फिर आप जहाँ बोलोगे हम वहां ले जाएँगे परन्तु वह नहीं देखी. महिला को 3 बजे लेकर जिला अस्पताल के लिए निकले और 4:30 बजे वहां पहुंचे. महिला को जिला अस्पताल में भर्ती किया गया और डॉक्टर ने जाँच कर बताया कि प्रसव सामान्य तरीके से हो जाएगा परन्तु 2-3 घंटे बाद बताया गया कि बच्चा पेट में ही मर गया है. इस जानकारी के बाद ऑपरेशन कर बच्चा निकालने की तैयारी की जा रही थी और महिला की मृत्यु हो गयी. महिला के पुरे इलाज में करीब 50-60 हज़ार का खर्चा आया.

नवजात मृत्यु सम्बन्धि केस स्टडी

1. ग्राम पंचायत - वासिन, विकासखंड - फिंगेश्वर, जिला - गरियाबंद

दिनांक 13.11.16 को मितानिन लक्षवन्तिन बाई को रात को 1 बजे समुदयोक स्वास्थ्य केंद्र फिंगेश्वर ले कर गयी थी. सी.एच.सी. में ए.एन.एम ने जाँच किया तो बच्चे का सिर बाहर आ गया था , फिर भी ए.एन.एम ने कहा की बच्चा उल्टा है इसे महासमुंद खरोरा लेकर चले जाओ. मितानिन ने बोला भी की आप एक बार कोशिश कर लीजिये तो ए.एन.एम मितानिन पर गुस्सा हो गयी और कहने लगी कि तुम हमसे ज्यादा जानती हो क्या. मितानिन ने फिर 102 गाड़ी से रात को लगभग 2 बजे लक्षवन्तीन को खरोरा ले कर जाने लगी ही थी कि रास्ते में ही लक्षवन्तीन का प्रसव सामान्य तरीके से हो गया और बच्चा उल्टा नहीं बल्कि सीधा बाहर आया. बिना नाल कटे बच्चे को खरोरा अस्पताल ले कर गए. बच्चा गन्दा पानी पी चुका था इस वजह से बच्चे की मृत्यु हो गयी. अगर प्रसव फिंगेश्वर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में हो गया होता तो शायद बच्चे को बचाया जा सकता था.

2. ग्राम - नवा पारा, विकासखंड - पाली, जिला - कोरबा गाँव के गड़ाई पारा में एक गर्भवती माता को 7वें माह में प्रसव पीड़ा शुरू हो गयी थी. मितानिन का घर दूर होने के कारण गर्भवती के परिवार वाले मितानिन से संम्पर्क नहीं होने के कारण गर्भवती को सीधे उसके घर ही लेकर चले गए. मितानिन ने तुरन 108 को फोन लगाया परन्तु गर्भवती की स्तिथि को देखते हुए घरवारले मोटर साईकिल से ही गर्भवती को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले कर चले गए. प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र चैतमा पहुँचने पर घरवालो ने अस्पताल का दरवाजा खोलने को कहा परन्तु पी.एच.सी द्वारा दरवाजा नहीं खोला गया. गर्भवती का प्रसव दरवाजे पर ही हो गया और बच्चे की मृत्यु हो गयी.

कला बाई - मितानिन, मितानिन प्रशिक्षक - धीरजा कुंवर, शिव बाई - हितग्राही

2.गैर मातृत्व या अन्य रोगों संबंधी समस्या

इस अध्ययन में सभी तरह के मरीजों जिसमे मातृत्व के साथ ही साथ गैर मातृत्व प्रकरणों का अध्ययन किया गया जिसमें संचारी गैर संचरी रोग भी शामिल किये गए है. इससे सम्बंधित जानकारी निम्न है -

Disease wise Table समस्या की जानकारी

S.N.	Name of Disease	No.of cases	%
1	Family Planning परिवार नियोजन	9	14%
2	IUCD आई.यू.सी.डी.	4	6%
3	Childhood Disease बच्चो में बीमारी	18	27%
4	Adult-Communicable Disease बड़ो में संचारी रोग	7	11%
5	Adult-Non-Communicable Diseases बड़ो में गैर संचारी रोग	28	42%
Total		**66**	100%

इस सरणी से यह स्पष्ट होता है की अस्पताल में मरीजो के साथ इलाज में लापरवाही व् दुर्व्यवहार के वाल मातृत्व प्रकरणों में ही नहीं बलि गैर मातृत्व प्रकरणों में भी हुए है. गैर संचारी रोगों के कुल 66 मरीजो में से 28 मरीज गैर संचारी रोगों सम्बंधित है जिनमें आँख की तकलीफ, बुखार और दुर्घटना के मरीज शामिल है. 18 प्रकरण जो की कुल प्रकरण का 27% है बच्चो संबंधी बीमारी के मरीज है. इसके साथ ही साथ 9 मरीज परिवार नियोजन के है जिनको ऑपरेशन के लिए बहुत परेशानी का सामना करना पड़ा जैसे की मारिज को दी गयी तारीख में बुला कर वापस कर दिया गया एक प्रकरण में तो मरीज को बेहोशी का इंजेक्शन लगाने के बाद भी ऑपरेशन नहीं किया गया.

ग्राम - चचिया, दर्रिपार, विकासखंड - कोरबा, जिला - कोरबा

दिनांक 25.10.16 को मितानिन टी.बी. के संभावित मरीज को जाँच करवाने के लिए जिला अस्पताल ले आकर गयी थी. अस्पताल के टी.बी. विभाग जे डॉक्टर ने मितानिन सरोज पटेल और अनीता राठिया को कड़े शब्दों डांटते हुए कहा कि क्यूँ इसके पीछे पडी हो, क्यूँ बार-बार जाँच करवाने ले आकर आ जाती हो. मितानिनों के दवारा मरीज को फिर जाँच के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया. दिनांक 7.11.16 को जाँच के दौरान मरीज को टी.बी. निकला. सरोज पटेल, अनीता राठिया - मितानिन

गैर संचारी रोग के सम्बन्ध में मरीज के इलाज में की गयी लापरवाही संबंधी केस स्टडी

1. ग्राम - अकोलीकला, विकासखंड - आरंग, जिला - रायपुर

नावोदिया पति बैसाखू उम्र 60 वर्ष की बायीं आँख का ऑपरेशन अप्रैल 2016 में निजी अस्पताल अस्पातल में किया गया था. ऑपरेशन के बाद नावोदिया को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है. अस्पातल वालो दवरा स्मार्ट कार्ड से पैसा भी निकाल लिया गया, परिवहन खर्च भी लिया गया और आँख की रौशनी भी चली गयी.

नवीना साहू -- स्वस्थ पंचायत समन्वयक

Type of facility visited

S.N.	Name of Facility	No.of cases	%
1	Medical College मेडिकल कालेज	4	6%
2	District Hospital जिला अस्पताल	13	20%
3	Civil Hospital सिविल अस्पताल	0	0%
4	CHC सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र	33	51%
5	PHC प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र	6	9%
6	SHC उप स्वास्थ्य केंद्र	5	8%
7	Camp शिविर	1	2%
8	Private Hospital निजी अस्पताल	3	5%
Total कुल		**65**	100%

यह सारिणी यह प्रदर्शित करती है की गैर मातृत्व प्रकरणों के 65 मरीजो में सबसे अधिक 33 प्रकरणों के स्वास्थ्य अधिकारों का हनन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में हुआ जो की कुल प्रकरणों का 51% है. 13 प्रकरण जिला अस्पताल के है. इसके साथ ही साथ 3 मरीजो को निजी अस्पताल में भी स्वास्थ्य अधिकार का हनन हुआ है जी की कुल प्रकरण का 5% है.

Problem wise Table समस्यानुसार सारिणी

S.N. क्र.	Type of Problems faced in hospital अस्पताल में जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा	प्रकरण No.of cases	%
1	Service not received सेवा नहीं मिली	17	26%
2	Negligence लापारवाही	18	28%
3	Refer due to fear डर के कारण रेफर करना	0	0%
4	Wrong information given गलत जानकारी देना	4	6%
5	Delay in Service इलाज में देरी	4	6%
6	Doctor/Nurse not available डॉक्टर/नर्स उपस्तिथ नहीं होना	0	0%
7	Money Demand पैसों की मांग	0	0%
8	Money taken पैसे लिए गए	5	8%
9	Cutting unnecessary amount Rsby card RSBY कार्ड से अनावश्यक रूप से पैसे काटना	0	0%
10	Purchese Drug / Material from out side दवा/अन्य सामग्री बाहर से मंगवाना	7	11%
11	Transportation facility not available from home/ Place घर से अस्पताल तक वाहन की सुविधा नहीं होना	7	11%
12	Transportation came to the house, but not taken to hospital वहां घर तक आना परन्तु अस्पताल नहीं ले जाना	0	0%
13	Govt. Transportation Delay in service शासकीय वाहन दवारा सेवा में देरी	0	0%
14	Inter-facility Transportation not availableएक स्थान से दुसरे स्थान जाने के लिए वाहन की सुविधा उपलब्ध नहीं होना	1	2%

15	108 by the technician moved forcefully private hospital 108 टेक्नीशियन के दवरा जबरदस्ती निजी अस्पताल ले कर जाना	1	2%
16	Demand money by Govt transport provider शासकीय गाड़ी उपलब्ध कराने वाले दवारा पैसे की मांग की गयी	1	2%
17	money taken by Govt transport providerशासकीय वाहन उपलब्ध करने वाले के दवारा पैसे लिए गए.	2	3%
18	Mis-behave by Medicale College hospital staff मेडिकल कालेज कर्मचारी दवारा दुर्व्यवहार किया गया.	1	2%
19	Mis-behave by Distt hospital staff जिला अस्पताल में कर्मचारियों दवारा दुर्व्यवहार	6	9%
20	Mis-behave by Civil Hospital staff सिविल अस्पताल में कर्मचारियों दवरा दुर्व्यवहार	1	2%
21	Mis-behave by CHC staff सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों के दवारा दुर्व्यवहार	10	15%
22	Mis-behave by PHC staff प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों दवारा दुर्व्यवहार	1	2%
23	Mis-behave by SC staffउपस्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारीय दवरा दुर्व्यवहार	5	8%
25	Mis-behave by Govt transport provider शासकीय वाहन चालक दवारा दुर्व्यवहार	4	6%
26	Multiple Referral एक से ज्यादा बार रेफर	0	0%
27	Refer to private hospital निजी अस्पताल में रेफर करना	1	2%
28	Refer to private Lab निजी लैब में रेफर करना	1	2%
Total		**65**	100%

इस सारिणी से यह जानकारी मिलती है कि गैर संचारी रोगों के सबसे अधिक 18 प्रकरण जो की कुल प्रकरणों का 28% है के साथ अस्पताल में इलाज के दौरान लापरवाही की गयी. 17 प्रकरण जो की कुल प्रकरण का 26% है में मरीजो को अस्पताल में इलाज ही नहीं किया गया. 10 मरीज जिनका प्रतिशत 15 है के साथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के कर्मचारियों दवारा दुर्व्यवहार किया गया, 6 मरीजो के साथ जिला अस्पताल में दुर्व्यवहार किया गया. इसके साथ ही साथ 7 प्रकरणों में मरीज को इलाज के बाद अस्पताल से घर जाने के लिए वाहन सुविधा नहीं दी गयी.

इनमे से बहुत से प्रकरणों में मरीज को 2 से 3 सेवाओं की आवश्यकता थी और हर सेवा प्राप्त करने में उनके अधिकारों का हनन किया गया. इस सारिणी में देखा जाए तो बहुत से प्रसव के मरीज को 1-2 जगह रेफर किया गया हो और प्रसव के मरीज से पैसे की मांग की गयी हो.

Type of Death मृत्यु के प्रकार

S.N.	Type of Death मृत्यु का प्रकार	No.of cases	%
1	Child Death बच्चे की मृत्यु	6	9%
2	Still Birth मृत जन्म	0	0%
3	Mothers Death माँ की मृत्यु	0	0%
4	Newborn Death नवजात मृत्यु	1	2%
Total कुल		**7**	100%

गैर संचारी रोग के अंतर्गत 6 बच्चो की मृत्यु की जानकारी इस तालिका से मिलती हिया जो की कुल प्रकरण का 9% है. इसके साथ ही साथ 1 नवजात की म्रत्यु की भी जानकारी मिलती है.

गैर संचारी रोगों के मरीजों की मृत्यु संबंधी केस स्टडी

1. ग्राम - गडेगाँव, पंचायत - कोलियरी, विकासखंड - अंतागढ़, जिला - कांकेर

दिनांक 30.08.2016 को श्रवण कुमार मरकाम अपनी 3 वर्षीय बच्ची अंकिता जिसे मौसमी बुखार और निमोनिया हो गया था को लेकर सुबह-सुबह प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र आमाबेड़ा पहुंचे. 8 बजे तक अस्पताल में इलाज करने के लिए कोई नहीं था. श्रवण कुमार अस्पताल से लगे डॉक्टर के घर गए. डॉक्टर रात की ड्यूटी है कहकर नहीं आए. अंकिता की बिगड़ती तबियत को देखकर श्रवण कुमार कुछ देर बाद फिर से डॉक्टर को बुलाने के लिए गए और बेटी को उनके घर में भी देखने के लिए कहा परन्तु डॉक्टर ने हाथ जोड़कर मना कर दिया और 9 बजे के बाद आने के लिए कहा. अंकिता की तबियत बिगड़ती जा रही थी और माँ -बाप अपनी बच्ची के इलाज के लिए इधर-उधर भटक रहे थे. सुबह 9:15 को करीब डॉक्टर और नर्स ड्यूटी पर आए और 10 बजे तक बच्ची के इलाज की पर्ची ही बनाते रहे. इसी बीच अंकिता की म्रत्यु हो गयी. जब माँ-बाप ने डॉक्टरों को देखने को कहा तो डॉक्टरों ने अंकिता के मृत शरीर में ऑक्सीजन मास्क का प्रयोग करने लगे और कुछ देर बाद परिजनों को बच्ची की मृत्यु की जानकारी दिए.

2. ग्राम तेलियापनी ले., विकासखंड - पंडरिया, जिला - कवर्धा

गाँव की मितानिन अंधरी बाई के पड़ोस में रहने वाले धरम पिता फागी राम बैगा की 1 वर्ष की बच्ची की तबीयत बहुत ख़राब थी उसे दस्त हो रहे थे. परिवार वाले दांत आ रहे है कहकर ज्यादा ध्यान नहीं दिए और मितानिन से ओ.आर.एस. का पैकेट लेकर पिलाते रहे. 2 दिन तक ठीक नहीं होने पर मितानिन ने दिनांक 28.08.15 को 108 गाड़ी को फोन लगाया परन्तु गाड़ी ख़राब है कहकर गाड़ी नहीं आई. बच्ची की तबीयत और बिगढ़ रही थी, मितानिन ने कुछ घंटे बाद फिर से 108 गाड़ी को फोन लगाया. बच्ची की तबियत तब तक और बिगड़ गयी थी उसे दस्त के साथ उल्टी भी चालू हो गयी थी. 108 गाड़ी 8 घंटे देर से आई तब तक बच्चे की मृत्यु हो चुकी थी. अगर गाड़ी समय पर पहुँची होती तो शायद बच्ची की जान बचायी जा सकती थी.

नेमिन साहू- 8349604430

निजी अस्पताल

सरकारी अस्पताल से सेवा नहीं मिलने या नहीं मिलने की आशा के कारण बहुत से लोग अपने परिवार के बीमारी व्यक्तियों को इलाज के लिए ठीक होने की आशा में निजी अस्पताल ले कर जाते है जिसमें बहुत से निजी अस्पतालों में मरीजो को दुर्व्यवहार, इलाज से ज्यादा बिल, इलाज में लापरवाही की घटनाएँ घटती है.

Disease wise table बीमारी अनुसार सारिणी

S.N.	Name of Disease बीमारी	No.of cases	%
1	Delivery प्रसव	36	84%
2	ANC प्रसव पुर जाँच	0	0%
3	Family Planning परिवार नियोजन	0	0%
4	IUCD आई.यु.सी.डी.	1	2%
5	Newborn नवजात	7	16%
6	Childhood Disease	1	2%
7	Adult-Communicable Disease	0	0%
8	Adult-Non-Communicable Diseases	5	12%
Total		**43**	100%

इस सारिणी से यह पता चलता है कि निजी अस्पताल के दुर्व्यवहार व् लापरवाही के कुल 43 प्रकरणों में सबसे अधिक 36 प्रसव के प्रकरण जो की कुल प्रकरण का 84% है में निजी अस्पताल में मरीज को दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा. इस सारिणी में कुछ प्रकरण ऐसे भी है जिन्हें दो सेवाओं की आवश्यकता थी और उन्हें वह नहीं मिल पाई या उसे पाने के लिए उन्हें बहुत सहना पड़ा.

Problems in Private Hospital

S.N.	Type of Problems faced in Private hospital	No.of cases	%
1	Mis-behave	1	2%
2	High biling by private hospital	10	23%
3	Pressure on family to pay bill (by withholding discharge etc)	3	7%
Total		**43**	100%

इस सारिणी के अनुसार निजी अस्पताल जाने वाले 43 प्रकरणों में 10 मरीजो से जो की कुल प्रकरणों का 23% है को इलाज का बहुत ज्यादा बिल बनाकर दिया गया. 3 प्रकरणों में मरीज को बिल की राशि जमा नहीं करने पर घर जाने नहीं दिया गया. निजी अस्पतालों समबन्धित प्रकरणों में से एक प्रकरण में मृत शरीर परिजनों को तब तक

ननहीं दिया गया जब तक की उन्होंने बिल की राशि जमा नहीं की और प्रसव के भी कुछ प्रकरणों में बच्चे को बिल की राशि जमा करने पर ही परिजनों को दिया गया.

निजी अस्पताल में अत्यधिक बिल की राशि नहीं दे पाने पर निजी अस्पताल की क्रूरता संबंधी केस स्टडी

ग्राम - देवरीकला, विकासखंड - पेंड्रा, जिला - बिलासपुर

सुमन धुर्वे पति संतोष धुर्वे को प्रसव पीड़ा होने पर 7.11.15 को परिवार वाले सेनेटोरियम अस्पताल लेकर गए. सेनेटोरियम के डॉक्टर ने जाँच कर बताया कि खून की कमी है और 3 बाटल खून चढ़ाया गया. परिवार वालो के इसमे 4000 रुपए खर्च हो गए. 10.11.15 को डॉक्टर ने सुमन को सिम्स रेफर कर दिया. 11.11.15 को परिवार सुमन को ट्रेन से लेकर बिलासपुर के लिए निकले और उसलापुर स्टेशन से 102 गाड़ी से सिम्स पहुंचे. सिम्स में डॉक्टर ने भर्ती कर लिए परन्तु कोई इलाज नहीं किया गया. परिवार वालो ने इस तरह की लापरवाही देखते हुए सुमन को निजी अस्पताल ले गए. इस अस्पताल में भी कोई डॉक्टर नहीं मिले तो सुमन को दुसरे निजी अस्पताल ले गए, वहां भी डॉक्टर नहीं मिले फिर सुमन को तीसरे निजी अस्पातल ले गए. इस अस्पताल के डॉक्टर ने सुमन को भर्ती कर लिया और परिवार वालो को कह दिया कि 15-20 हज़ार का खर्चा आएगा. सुमन के परिवार वालो ने 16000 रुपए जमा कर दिए. डॉक्टर ने ऑपरेशन किया और लड़की का जन्म हुआ. परिवार वालो ने 45000 रुपए की दवाई खरीदी इसके आलावा 3 बाटल खून भी लगाया गया. सुमन की एक सप्ताह बाद छुट्टी की गयी और 54000 रुपए का बिल दिया गया. परिवार वालो के पास पैसे नहीं थे. डॉक्टर को जब यह बात पता चली तो उन्होंने कहा कि बच्चे को यहीं छोड़ दो पैसे की व्यवस्था कर लेना फिर बच्चे को लेने आ जाना. परिवार वाले घर आ गए और एक सप्ताह के बाद मरवाही के विधायक को अपने साथ हुयी घटना की सुचना दी. विधायक के द्वारा मरवाही के कलेक्टर, सी.एम्.ओ. व् आई.जी. को इस घटना की सुचना दी गयी. सी.एम्.ओ. अपने साथ पुलिस लेकर बच्चे को लेने अस्पताल गए और बच्चे को परिवार वालो को सौंपा.

Type of Death

S.N.	Type of Death	No.of cases	%
1	Child Death बाल	1	7%
2	Still Birth मृत जन्म	1	7%
3	Maternal Death मातृत्व मृत्यु	6	40%
4	Newborn Death नवजात मृत्यु	7	47%
Total कुल		**15**	100%

इस सारिणी में निजी अस्पतालों में कुल 15 प्रकरणों की मृत्यु की जानकारी मिलती है, जिसमे 7 नवजात मृत्यु जो की कुल प्रकरण का 47% है. 6 मातृत्व म्रत्यु जो की कुल प्रकरण का 40 % है इसके साथ ही 1 बाल मृत्यु व् 1 मृत बच्चे के जन्म की जानकारी मिलती है.

निजी अस्पताल में लापरवाही से मृत्यु संबंधी केस स्टडी

1. ग्राम - मोहतरा, विकासखंड - साजा, जिला - बेमेतरा (निजी अस्पताल प्रकरण)

गाँव की मितानिन ज्योति यादव चौथा प्रसव होने वाला था. इसके पहले ज्योति के दो बच्चो की मृत्यु प्रसव के कुछ ही समय बाद हो गयी थी. इस प्रसव के दौरान दिनांक 14.8.16 को ज्योति को गर्भाशय से खून व् पानी जाने के कारण सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया. सी. एच, सी. में जाँच के बाद ज्योति को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया. इस समय तक ज्योति की बातचीत कर रही थी, खाना भी खायी थी. इसी बीच ज्योति के घर वालो ने ज्योति को सरकारी अस्पताल नहीं ले जाने का निर्णय लिया और खुर्सीपार, भिलाई में स्तिथ एक निजी अस्पताल ले गए. अस्पताल में डाक्टरों ने ऑपरेशन कर ज्योति का प्रसव करवाया. प्रसव के बाद डाक्टरों ने बताया कि बच्चा ठीक है परन्तु ज्योति की तबीयत ख़राब है. थोड़ी देर बाद सुचना दी गयी कि ज्योति के फेफड़ो में पानी भर जाने एवं श्वास नली में खाना फंस जाने के कारण ज्योति की मृत्यु हो गयी है. परिवार वालों को यह बात बिलकुल समझ नहीं आयी कि ऑपरेशन के पहले अच्छे से बात-चीत करके गयी ज्योति की जान कैसे जा सकती है. परिवार वालो का मानना है कि ज्योति को ऑपरेशन की जरुरत नहीं थी, अस्पताल वालो ने पैसे की लालच में ज्योति का ऑपरेशन किया. नंदकुमार - स्वस्थ पंचायत समन्वयक

उपसंहार - इस अध्ययन के तहत संकलित 367 केस स्टडी में 165 प्रकरण सामुद्यिक स्वास्थ्य केन्द्र, 112 जिला अस्पताल एवं अन्य प्राथमिक, उपस्वास्थ्य केंद्र व् निजी अस्पताल से सम्बंधित थे. संकलित केस स्टडी में 272 प्रकरण प्रसव एवं 50 नवजात के सम्बन्ध में की गयी लापरवाही, दुर्व्यवहार, सेवा नहीं देने, पैसे लेने सम्बंधित थे. इसके साथ ही साथ इस अध्ययन में यह भी पता चलता है की अस्पताल प्रशासन की लापरवाही की वजह से 51 नवजात व् 24 माताओं की मृत्यु हुयी है. यह अध्ययन स्पष्ट रूप से गरीब लोगो के स्वास्थ्य अधिकारों के हनन को दर्शता है. इस स्तिथि का कारण शासकीय अस्पताल में ढांचागत कमियां अर्थात कर्मचारियों, इलाज के सामान की कमी के साथ ही साथ इच्छाशक्ति की कमी को दर्शाता है वहीँ निजी अस्पतालों में ज्यादा पैसा कमाने की सोच मरीजो के साथ दुर्व्यवहार व् लापरवाही को दर्शाते है. स्वास्थ्य तंत्र की इन कमियों में सुधार के लिए योजना व् निगरानी की प्रक्रियाओं व् तंत्रों का विकेंद्रीकरण करना होगा जिनमें स्थानीय अभिशासन, नियंत्रण भागीदारी व् जवाबदारी को शामिल करना होगा. शासन दवारा स्वास्थ्य क्षेत्रों से जुड़े कर्मचारियों के लिए संवेदनशीलता पर कार्यशाला लगाए जाने की आवश्यकता है.

लापरवाही संबंधी अतिरिक्त केस स्टडी

Case Studies No 3

सिविल अस्पताल - पखांजूर, जिला - कांकेर

दिनांक 24.07.16 को ग्राम P.V.57 SE गर्भवती महिला अन्ना मंडल पति भवतोष मंडल को मितानिन 102 गाड़ी से रात 12 बजे पखांजूर सिविल अस्पताल प्रसव के लिए ले कर गयी थी. अस्पताल में नर्स ने जाँच कर बताया कि अभी समय नहीं हुआ है बिस्तर पर ले जाओ. अन्ना पूरी रात दर्द से तड़प रही थी. दुसरे दिन दिनांक 25.07.16 को सुबह दूसरी नर्स ड्यूटी पर आई तो उन्होंने अन्ना की जाँच करके बताया की अभी प्रसव का रास्ता नहीं खुला है समय लगेगा. अन्ना दर्द से तड़प रही थी. अन्ना के घरवाले जाकर डॉक्टर को बुलाकर लाए. डॉक्टर दरवाजे तक आए लेकिन अन्ना को नहीं देखे उन्होंने कहा कि यह नर्स का काम है. घरवाले नर्स से मिलकर बोले की हमारे लिए 102 गाड़ी की व्यवस्था कर दो हम अन्ना को सरकारी अस्पताल भानुप्रतापपुर ले जाएँगे. नर्स ने घरवालो को कह दिया कि डॉक्टर की अनुपस्तिथि में हम गाड़ी की व्यवस्था नहीं कर सकते. अन्ना के घरवालो ने प्राइवेट गाड़ी कर अन्ना को भानु मितानिन के सहयोग से सरकारी अस्पताल भानुप्रतापपुर ले गए. यहाँ डॉक्टर ने प्रसव कराया जिसमें एक मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ. अन्ना के घरवालों का मानना है कि इसके जिम्मेदार डॉक्टर और नर्स है जिन्होंने सही समय पर अन्ना का इलाज नहीं किया. भानुप्रतापपुर अस्पताल में भी प्रसव के बाद प्रसूता जिसका बच्चा मरा हुआ जन्म लिया उससे पूरी साफ-सफाई करवाई गयी.

मितानिन - भानुमति, मितानिन प्रशिक्षिका - स्मृति घरामी

Case Studies No-1

ग्राम–बड़े आरापुर, विकासखण्ड–तोकापाल, जिला–बस्तर

बड़े आरापुर की कमला को प्रसव पीड़ा होते ही कमला के घर वाले मितानिन से सम्पर्क किये परन्तु मितानिन बाहर गाँव गयी थी। कमला के घर वालों ने फिर मितानिन प्रशिक्षिका से मदद मांगी। प्रशिक्षिका ने तुरंत 102 में फोन कर गाड़ी बुलाई और कमला को उसके घर वालों के साथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तोकापाल भेज दिया। अस्पताल में पहुंचते ही कमला की जाँच की गयी और कहा गया की यहाँ कमला का प्रसव नहीं हो सकता, इसे जगदलपुर जिला अस्पताल ले जाओ। कमला के पति ने कहा कमला की तबियत ठीक नहीं है आप लोग यही प्रसव करा दीजिये। अस्पताल कर्मचारियों ने मना कर दिया। कमला के पति ने उसी समय प्रशिक्षक को फोन करके पूरी बात बताई। मितानिन प्रशिक्षक कुछ ही समय में अस्पताल पहुंच गयी। अस्पताल पहुंचते ही उसने देखा की सभी ए.एन.एम. बाहर बैठे हैं और प्रशिक्षिका को देखते ही बोले की कमला का प्रसव यहाँ नहीं हो सकता है उसे जगदलपुर ले जाओ। प्रशिक्षिका ने पूछा यहाँ प्रसव क्यों नहीं हो सकता। ए.एन.एम. ने बोला बी.पी. ज्यादा है। प्रशिक्षिका ने बोला की मेरे सामने एक बार और बी.पी. जाँच कीजिए फिर तय करेंगे कमला को जगदलपुर ले जाना है या नहीं। ए.एन.एम. ने कह दिया की हमारे घर जाने का समय हो गया है हम कुछ नहीं कर सकते और बाहर निकल गए। प्रशिक्षिका

ने ए.एन.एम. को रूकने कहा और कमला को देखने अन्दर गयी। उसी समय कमला का प्रसव हो गया। प्रशिक्षिका दौड़ के ए.एन.एम. और डॉक्टर को बुलाने बाहर गयी परन्तु डॉक्टर गाड़ी से उतरे नहीं और ए. एन.एम. भी चली गयी। प्रशिक्षिका ने हिम्मत नहीं हारी और अन्दर जाकर आया की मदद से कमला का प्रसव ठीक तरह से करवाया।

Case Studies No-3

ग्राम–मल्लपारा, विकासखण्ड–तोकापाल, जिला–बस्तर

दिनांक 21.02.2014 को श्रीमति सनाय पति बुदान को प्रसव हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तोकापाल रात के समय में लाये थे। उस समय माता दर्द से कराह रही थी। रात के समय ड्यूटी करने वाली नर्स रूम में सो रही थी। मितानिन नीलादाई जाकर नर्स को उठाई तो नर्स भड़क गई और बोलने लगी की तू जाके उस माता को देख और भला बुरा सुना दी और फिर सोने चली गई। इधर माता का दर्द बढ़ रहा था। मितानिन माता की तकलीफ को देख फिर से नर्स के पास गई और बोली कि प्रसव के लिए रास्ता खुल रहा है तो नर्स भड़क कर बोली इतना जानती है तो तू स्वयं जा और डिलवरी करा ले। फिर मितानिन उदास होकर चली गई और इसके बाद माता को पानी आया परन्तु 35 मिनट तक प्रसव नहीं हुआ। थोड़ी देर बाद नर्स माता को देखी और जिला अस्पताल रेफर कर दी।

लापरवाही (Negligency)

Case Studies No - 10

ग्राम - रजपालपुर, विकासखंड - लोरमी, जिला - मुंगेली

दिनांक गर्भवती महिला पिंकी पति मनतराम को रात 8 बजे प्रसव पीड़ा होने पर घरवाले महिला को रात 10 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लोरमी ले कर गए. सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लोरमी में महिला दर्द से तड़प रही थी और मितानिन नर्स को लगभग 5 बार बुलाने गयी तब नर्स आई और अभी टाइम नहीं हुआ है और बेड भी खाली नहीं है इसे बाहर रखो कहा. घरवालो ने कहा भी की इसे बेड देदो तो नर्स ने कहा इसे मेरे सिर पर सुलाओगे क्या. गर्भवती का दर्द और बड़ने पर मितानिन जब फिर से नर्स को बुलाने गयी तो नर्स ने कहा अस्पताल में दवाई नहीं है बाहर से ले कर आओं. रात को 3 बजकर 25 मिनट पर महिला का प्रसव हुआ. प्रसव के बाद नर्स ने घरवालो से प्रसव कक्ष साफ़ करवाया. मितानिन ने बोला भी यह काम हमारा नही है तो मितानिन को डांटा गया.

चन्द्रकला राजपूत - स्वस्थ पंचायत समन्वयक

Service in delay

Case Studies No-2

समय पर प्रसूता की जाँच ना होने की वजह से नवजात की हुई मृत्यु

ग्राम–सातबाहना, ग्राम पंचायत–भड़सिवना, विकासखण्ड–नगरी, जिला–धमतरी

मितानिन–नीलकुमारी, मितानिन प्रशिक्षका–रमाकांत

अघंतिन को प्रसव पीड़ा जब शुरू हुई तब मितानिन उसे सुबह 10 बजे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सिहावा ले गयी वहां से डॉक्टर ने जाँच करके अघंतिन को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नगरी ले जाने कहा। नगरी अस्पताल ले जाने पर पता चला की डॉक्टर नहीं है। दो घंटे इंतजार के बाद डॉक्टर आए और उन्होंने अघंतिन की जाँच करके बोला की इनका ऑपरेशन करना पड़ेगा इन्हें आप लोग प्राइवेट अस्पताल धमतरी ले जाओ। अघंतिन को धमतरी ले जाते शाम के 5 बज गए। धमतरी अस्पताल में इलाज के लिए 20 हजार की मांग की गयी। अघंतिन के घर वालों ने स्मार्ट कार्ड दिया तो उन्होंने बताया की इसमें पैसा नहीं बचा है। किसी तरह घर वालों ने 20 हजार रूपए का इंतजाम किया और अघंतिन का इलाज चालू करवाया। जब तक इलाज चालू होता तब तक बच्चा पेट में ही मर चूका था। ऑपरेशन कर मृत बच्चे को निकाला गया। इसके बाद अघंतिन की हालत और बिगड़ने लगी। अघंतिन के शरीर में सुजन आ गयी थी वह तड़प रही थी। अस्पताल वालों ने अघंतिन के इलाज के लिए फिर से 20 हजार रूपए की मांग की। मितानिन ने स्मार्ट कार्ड अधिकारी और मुख्य चिकित्सा अधिकारी से स्मार्ट कार्ड से इलाज के लिए फोन पर मदद मांगती रही पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। मितानिन बिना समय गवाएँ नवजात की लाश लेकर गाँव गयी जहाँ उसका अंतिम संस्कार किया गया और अघंतिन के परिवार वाले जेवर गिरवी रखकर अघंतिन के इलाज के लिए पैसे इकठ्ठा किये। मितानिन पैसे लेकर वापस धमतरी गयी। पैसा मिलते ही इलाज चालू किया गया परन्तु दूसरे दिन फिर से पैसे की मांग की जाने लगी और ईलाज बंद कर दिया गया। इस बीच मितानिन ने स्मार्ट कार्ड अधिकारी और मुख्य चिकित्सा अधिकारी से फिर से फोन पर बात की परन्तु उन्होंने मितानिन की कोई बात नहीं सुनी। अंत में मितानिन ने स्मार्ट कार्ड अधिकारी और मुख्य चिकित्सा अधिकारी को इस केस की शिकायत जिला कलेक्टर से करने की बात कही तब उन्होंने कलेक्टर के डर से समार्ट कार्ड चालू करवाया। मितानिन के प्रयास से अघंतिन तो बच गयी परन्तु उसके बच्चे को सही समय पर जाँच नहीं होने की वजह से नहीं बचाया जा सका।

ANC

Case Study –13

ग्राम - डुमरिया, विकासखंड - सहस.लोहारा, जिला - कबीरधाम

दिनांक 22.07.16 को दोपहर 12 बजे 7 माह की गर्भवती दुर्गा यादव पति श्रवण को बुखार आया तो वह प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र रणवीरपुर गयी. पी.एच.सी. में जाँच करने के बाद डॉक्टर के दवारा दुर्गा को एक ड्रिप चढ़ाया गया और दवाई बाहर से मंगवाई गयी. ड्रीप बहुत तेज गति से लगाने के कारण दुर्गा के हाथ में दर्द होने लगा तो उसने ए.एन.एम् संदीपा से दर्द होने की बात बताई. ए.एन.एम् ने दुर्गा को यह कहकर डांटने लगी कि हम लोगो का जाने का समय हो गया है, तुम लोगो का इलाज करते बैठे रहेंगे क्या. इतना कहकर ए.एन.एम् ने जोर से बाटल के सिरिंज को खींचकर मुझे घर जाओ कहकर अस्पताल से बाहर निकाल दिया. उस समय शाम के 3 बजकर 45 मिनट हो रहे थे. दुर्गा वहां से गयी और फिर निजी अस्पताल में अपना इलाज करवाई.

दुर्गा यादव - हितग्राही

Case Studies -12

ग्राम - सूती उरकुली, विकासखंड - बिलाईगढ़, जिला - बलौदाबाजार

गाँव की एक गर्भवती महिला दिव्या खूंटे का छटवां माह चल रहा था. एक दिन उसे गाय बांधते समय गाय ने सिंग से पेट में मार दिया. गर्भवती ने यह बात मितानिन को बतायी और कहा की उस दिन से पेट में बच्चे की हलचल धीमी हो गयी है. मितानिन ने तुरंत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बिलाईगढ़ जाने की सलाह दी. दिनांक 26.07.16 को दोपहर 2 बजे गर्भवती अपने पति के साथ सी.एच.सी. गयी. सी.एच.सी. में उस समय 2-3 स्टाफ नर्स थे. गर्भवती ने उन्हें बताया कि मेरे पेट में गाय ने मार दिया है तब से पेट में बच्चे की हलचल धीमी हो गयी है. स्टाफ नर्स ने कोई जाँच नहीं की और न ही कोई सलाह दी. गर्भवती और उसके पति दूसरी ए.एन.एम् से मिलने गए तो उन्होंने तुरंत जगदीशपुर रेफर कर दिया. जगदीशपुर अस्पताल में गर्भवती की पूरी जाँच की गयी और दवा आदि दिया गया. गर्भवती को उन दवाओं से आराम मिला.

सीमा यादव

स्वस्थ पंचायत समन्वयक

Childhood Diesis

Case Studies 1.

रायपुर जिला अस्पताल में जननी शिशु सुरक्षा योजना के मरीज से पैसा लिया जाना

वार्ड न. 44 काशीराम नगर की पुर्णाबाई मितानिन रोहिणी काले के साथ प्रसव के लिए 31.1.16 को जिला चिकित्सालय गयी थी। प्रसव के **तीन** दिन बाद पूर्णा की छुट्टी कर दी गयी परन्तु बच्चे को पीलिया हो गया था तो **बच्चे** इलाज के लिए भर्ती रखा गया। अस्पताल में डॉक्टर ने पूर्णा से बच्चे के इलाज के लिए तुरंत 18 हजार जमा करने कहा। पूर्णा ने कहा की मेरे पास पैसा नहीं है तो डॉक्टर ने कहा कि 12 हजार ले आओ। पूर्णा अपनी मालकिन जिनके घर वह बर्तन, झाड़ू व् पोछा करती थी उनसे ब्याज पर पैसा लेकर आयी। पूर्णा से 27 सौ रूपए नगद और 6 दिन तक 450 रुपए का प्रतिदिन इंजेक्शन मंगाया गया। 15 दिन बाद बच्चे की छुट्टी की गयी और पैसा वापस हो जाएगा कहा गया।

पूर्णा रोज जिला अस्पताल का चक्कर काटने लगी रोज आज-कल कहकर अस्पताल वाले टालते गए. पूर्णा ने 104 में शिकायत की गयी पर उसकी शिकायत दर्ज नहीं की गयी. पूर्णा एक घरेलू कामगार महिला है और उसके लिए रोज काम से छुट्टी लेकर अस्पताल जाना मुश्किल है. पूर्णा ने अपनी समस्या महिला आरोग्य समिति को बताई. महिला आरोग्य समिति ने 104 न. में फोन कर शिकायत दर्ज की तो उन्हें यह कहा गया कि जब तक आप डॉक्टर का नाम नहीं बताएँगे तब तक हम आपकी शिकायत दर्ज नहीं कर सकते. पूर्णा एक गरीब और अनपढ़ महिला है उसने इलाज के दौरान डॉक्टर का नाम जानना जरुरी नहीं समझा. पूर्णा अगर काम करने नहीं जाएगी तो उसका परिवार भूख से मरने की स्तिथि में आ सकता है. पूर्णा ने अपने बच्चे के इलाज में जो पैसा खर्च किया है उसे वापस पाने का अधिकार है. आशा है शासन गरीबो की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए जो योजनाएं बना रही है उसका लाभ उन्हें बिना किसी परेशानी के मिल सके.

पूर्णा बाई ताई

बिल भुगतान नहीं होने के कारण शव या मरीज का बंधक

NEGLIGENCE – 27

1. ग्राम - कुटेला, विकासखंड - आरंग, जिला - रायपुर

दिनांक 1.11.16 को शाम को 7 बजे 3 लोग समोरा से कुटेला वापस आ रहे थे तो दुर्घटना हुयी जिसमें 1 व्यक्ति की मृत्यु वहीं हो गयी और दोनों व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गए थे. घायल व्यक्तियों में से एक

जगप्रसाद चक्रधारी को 108 गाड़ी से महासमुंद के निजी अस्पताल में भर्ती किया गया. इस निजी अस्पताल में उसी समय एक घटना हुयी जिसमें एक मरीज की मृत्यु हो गयी थी और अस्पताल वाले बिना पैसा दिए लाश नहीं दे रहे थे. इसे देख कर जगप्रसाद के पिताजी भी परेशान हो गए. जगप्रसाद को 10 दिन होगए थे परन्तु उसे होश नहीं आया था. जगप्रसाद के पिता उसे घर लेजाना चाहते थे परन्तु 108 गाड़ी वाले ने किसी से फोन पर बात की और जगप्रसाद को रायपुर के एक अस्पताल ले जाकर छोड़ दिया. इस निजी अस्पताल में जगप्रसाद कोमा में था और 95 हज़ार रुपए जमा करवाए गए. जगप्रसाद का पिता जब अपने बेटे को देखता था उसे लगता थ उसका बेटा मर चूका है, उसका शरीर पीला पड़ गया डॉक्टर से पूछने पर कहते थे की वह जीवित है. दिनांक 21.11.16 को डॉक्टर ने जगप्रसाद को मृत घोषित कर दिया. निजी अस्पताल वालो ने 1 लाख 20 हज़ार रुपए देने के लिए कहा नहीं तो लाश नहीं देने की बात कहे. जगप्रसाद के घरवालो का कहना है कि जगप्रसाद की म्रत्यु हुए 3 दिन हो चुके थे और शरीर से बदबू आने लगी थी फिर जब परिवार वाले पैसा पटाये तो उन्हें जगप्रसाद की लाश दिए. लाश को पहले पोस्टमार्टम के लिए मेकाहारा भेजे और फिर वहा से मुक्तान्जली वाहन से लाश को गाँव छोड़े.

Case Studies No-2

2- ग्राम - देवरीकला, विकासखंड - पेंड्रा, जिला - बिलासपुर

सुमन धुर्वे पति संतोष धुर्वे को प्रसव पीड़ा होने पर 7.11.15 को परिवार वाले निजी अस्पताल लेकर गए. निजी अस्पताल के डॉक्टर ने जाँच कर बताया कि खून की कमी है और 3 बाटल खून चढ़ाया गया. परिवार वालो के इसमे 4000 रुपए खर्च हो गए. 10.11.15 को डॉक्टर ने सुमन को बिलासपुर के एक निजी अस्पताल रेफर कर दिया. 11.11.15 को परिवार सुमन को ट्रेन से लेकर बिलासपुर के लिए निकले और उसलापुर स्टेशन से 102 गाड़ी से निजी अस्पताल पहुंचे. इस निजी अस्पताल में डॉक्टर ने सुमन को भर्ती कर लिया परन्तु कोई इलाज नहीं किया गया. परिवार वालो ने इस तरह की लापरवाही देखते हुए सुमन को निजी अस्पताल ले गए. इस अस्पताल में भी कोई डॉक्टर नहीं मिले तो सुमन को दुसरे निजी अस्पताल ले गए, वहां भी डॉक्टर नहीं मिले फिर सुमन को तीसरे निजी अस्पातल ले गए. इस अस्पताल के डॉक्टर ने सुमन को भर्ती कर लिया और परिवार वालो को कह दिया कि 15-20 हज़ार का खर्चा आएगा. सुमन के परिवार वालो ने 16000 रुपए जमा कर दिए. डॉक्टर ने ऑपरेशन किया और लड़की का जन्म हुआ. परिवार वालो ने 45000 रुपए की दवाई खरीदी इसके आलावा 3 बाटल खून भी लगाया गया. सुमन की एक सप्ताह बाद छुट्टी की गयी और 54000 रुपए का बिल दिया गया. परिवार वालो के पास पैसे नहीं थे. डॉक्टर को जब यह बात पता चली तो उन्होंने कहा कि बच्चे को यहीं छोड़ दो पैसे की व्यवस्था कर लेना फिर बच्चे को लेने आ जाना. परिवार वाले घर आ गए और एक सप्ताह के बाद मरवाही के विधायक को अपने साथ हुयी घटना की सुचना दी. विधायक के द्वारा मरवाही के कलेक्टर, सी.एम्.ओ. व् आई.जी. को इस घटना की सुचना दी गयी. सी.एम्.ओ. अपने साथ पुलिस लेकर बच्चे को लेने अस्पताल गए और बच्चे को परिवार वालो को सौंपा.

Newborn

Case Studies No-15

ग्राम - सरवानी, पंचायत - सरवानी, विकासखंड - बम्हनीडीह, जिला - जांजगीर चांपा

दिनांक 18.07.16 को रात 10 बजे मानमति पति देवराम साहू, को प्रसव पीड़ा शुरू हुयी. मितानिन के साथ 102 गाड़ी से मानमती को निजी अस्पताल ले कर गए. निजी अस्पताल में यहाँ नहीं होगा कहकर जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया. 102 गाड़ी से रात के 12 बजे जिला अस्पताल पहुंचे. जिला अस्पताल में सामान्य प्रसव हो गया. बच्चे का वजन 3 किलो था परन्तु बच्चे का मलद्वार नहीं बना था. बच्चे को जिला अस्पताल से बिलासपुर की निजी अस्पताल रेफर किया गया. इस निजी अस्पताल में बोल दिया गया की यहाँ इलाज नहीं हो सकता. बच्चे को फिर शिशु रोग विशेषज्ञ के पास ले कर गए. शिशु रोग विशेषज्ञ ने बच्चे का ऑपरेशन किया जिसमे 50 हजार रूपए का खर्चा आया. ऑपरेशन के बाद कुछ दिन और रुकने के लिए कहा गया परन्तु गरीब परिवार के पास पैसे नहीं होने के कारण छुट्टी ले कर वे घर आ गए. घर पहुँचने के बाद 27.07.16 को बच्चे की मृत्यु हो गयी.

सविता पांडे - मितानिन

Case studies - 07

ग्राम - खोपा, विकासखंड - भैयाथान, जिला - सूरजपुर

7 माह की गर्भवती कलावती पति सोमार साय को दिनांक 3.12.16 को प्रसव पीड़ा शाम 6 बजे चालू हुयी. कलावती के पति ने RHO को फोन किया. RHO ने अपने भाई को भेज दिया. RHO के भाई ने इंजेक्शन लगाने के लिए भेज दिया. इस बीच मितानिन को भी बुलाया गया. मितानिन ने कलावती को उपस्वास्थ्य केंद्र ले आकर गयी. उपस्वास्थ्य केंद्र में ए.एन,एम् ने कहा कि अभी बच्चा नहीं होगा. मितानिन कलावती को घर ले आकर आ गयी. कलावती को रात को 2 बजे फिर से दर्द चालू हुआ और 3 बजे रात को प्रसव भी हो गया. मितानिन को पता चला तो वह कलावती को देखने गयी. मितानिन ने देखा कि बच्चा साँस नहीं ले पा रहा है. मितानिन ने 102 को फोन लगाया तो उन्होंने कहा कि 108 को फोन करो. मितानिन ने 108 को फोन किया परन्तु दोनों गाड़ी नहीं आयी. घरवाले निजी गाड़ी से अस्पताल गए और दोपहर 12 बजे बच्चे की म्रत्यु हो गयी.

फूलमती यादव - स्वस्थ पंचायत समन्वयक

IUCD

Case Studies No-12

ग्राम - गोपीनगर, विकासखंड - कुसमी, जिला - बलरामपुर

दिनांक 24.02.16 को बबिता पति अवध, माठी पारा कॉपरटी लगवायी थी. कॉपरटी लगवाने के बाद महिला को बहुत परेशानी हो रही थी. महिला ने मितानिन से बताया. मितानिन बबिता को लेकर जाँच करवाने के लिए गयी तो ए.एन.एम्. ने बबिता की जाँच नहीं की और बबिता ने जब कॉपरटी निकालने के लिए कहा तो नहीं निकाली गयी. मितानिन ने बबीता का एक्सरे करवाया तो पता चला की कॉपरटी उल्टा लगा था. अस्पताल की जिम्मेदारी थी कि कॉपरटी को निकाले परन्तु उनके दवारा ऐसा कुछ नहीं किया गया. बबीता बहुत हताश हो गयी और गाँव में अन्य लोगो को भी जब से यह बात पता चली है कोई अन्य कॉपरटी लगवाने के लिए तैयार नहीं हो रहा है.

सुरेखा सिंह - स्वस्थ पंचायत समन्वयक

Dog Bite

ग्राम - नवागाँव, विकासखंड - पथरिया, जिला - मुंगेली

दिनांक 26.10.16 को गाँव के एक मजदूर परिवार के 7 वर्षीय बेटे को कुत्ते ने काट लिया. परिवार वाले 12 बजे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पथरिया ले कर गए. सी.एच.सी में कुत्ता काटने से बचाव का इंजेक्शन नहीं होने की जानकारी दी गयी और बाहर से लाने के लिए कहा गया. परिवार वाले बाहर से इंजेक्शन खरीद कर लाए और फिर बच्चे को इंजेक्शन लगाया गया. परिवार वालो का कहना है की जब बाहर से ही लाना था तो घर के पास ही खरीद कर लगवा लेते इतनी दूर आने में समय बर्बाद कर दिए.

सरोजनी वर्मा- स्वस्थ पंचायत समन्वयक

102/108

Case Studies No-02

ग्राम - जुनवानी, पंचायत - टिन्डोड़ी, विकासखंड - भैरमगढ़, जिला - बीजापुर

गाँव के 5 वर्षीय वितेश कुमार माता का नाम पालो को मलेरिया हो गया था और वह बेहोश हो गया था. दिनांक 1.11.16 को बच्चे को 108 गाड़ी से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भैरमगढ़ को अस्पताल ले कर गए. दिनांक 2.11.16 को बच्चे को 102 गाड़ी से जगदलपुर महारानी अस्पताल रेफर कर दिया गया. 102 गाड़ी वाले ने बच्चे के घरवालो से 2000 रुपए मांगे. परिवार वालो ने बोला हमारे पास पैसे नहीं है तो उन्होंने बोला 1700 रुपए मांगे. घरवालों ने उन्हें बच्चे की स्तिथि को देखकर 1600 रुपए दिए और फिर 108 वाले बच्चे को जगदलपुर ले कर गए.

कुमारलाल कड़ती

Case Studies - 22

1. ग्राम - सिंघारी, विकासखंड - बरमकेला, जिला - रायगढ़

गाँव की सुनीता पति अरमान गारुडी को दूसरा प्रसव होने वाला था. दिनांक 26.11.16 को सुनीता को प्रसव पीड़ा होने पर 102 गाड़ी से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरमकेला ले कर गए. सी.एच.सी. में सुनीता की जाँच की गयी और 2 बाटल लगाया गयी. सुनीता का फिर सामान्य प्रसव हुआ. बच्चे का वजन 2 किलो था. जन्म के समय बच्चे की नाल गले में फंसी थी तो बच्चा रुक-रुक कर रो रहा था और स्तनपान भी ठीक से नहीं कर रहा था. बच्चे की स्तिथि ख़राब थी परन्तु उसे कोई नहीं देख रहा था. बहुत बोलने पर बच्चे को 2 सुई लगायी गयी परन्तु स्तिथि में कुछ सुधार नहीं हुआ तो बच्चे को जिला अस्पताल रायगढ़ रेफर कर दिया गया. 102 गाड़ी से बच्चे को अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही बच्चे की मृत्यु हो गयी. 102 गाड़ी वाले ने बच्चे की मृत्यु होने के बाद घरवालो को बीच रास्ते में ही उतार दिया.

भानुमती यादव - मितानिन, सीमा राजपूत - स्वस्थ पंचायत समन्वयक

Case Studies - 17

2. ग्राम - गोडिघरी, विकासखंड - सारंगढ, जिला - रायगढ़

दिनांक 23.09.16 को बाबूलाल यादव पिता बुद्धि यादव को खेत में दाव का छिड़काव करके घर आने के एक घंटे बाद बाबूलाल के तबियत ख़राब हो गयी थी. परिवार वालो ने मितानिन को बुलाया तो मितानिन ने मरीज कि स्तिथि को देखते हुए मितानिन ने तुरंत 108 गाड़ी को फोन करके बुलाया. 108 गाड़ी वाले ने गाड़ी अभी उपलब्धनहीं है कहा. परिवार वाले फिर अपने ही गाँव से गाड़ी ढूंडने लगे तो गाड़ी मिली परन्तु ड्राईवर नहीं मिला. मितानिन ने फिर दुसरे ड्राइवर को बुलाया और बाबूलाल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सारंगढ़ ले कर गयी. बाबूलाल बेहोशी की हालत में था और उसका तुरंत इलाज चालू किया गया. बाबूलाल अब ठीक है परन्तु बाबूलाल के परिवार

वालों की हमेशा है शिकायत रहती है की 108 गाड़ी कभी भी समय पर नहीं मिलती है और उनके दवरा नहीं आने के बहुत से बहाने बनाए जाते है.

रत्ना यादव - मितानिन

Childhood

Case Study – 10

1. ग्राम पंचायत - पैनारी, विकासखंड - खड़गवां, जिला - कोरिया

गाँव की तीन माह की बच्ची को निमोनिया हो गया था. मितानिन से संपर्क नहीं होने के कारण माँ अपनी बच्ची को 29.09.16 को लेकर मायके चली गयी. 31.09.16 को माँ बच्ची को बैकुंठपुर सरकारी अस्पताल ले कर गयी. उस दिन दीवाली होने के कारण कोई डॉक्टर ड्यूटी पर नहीं थे तो माँ बच्ची को लेकर वापस घर आ गयी. रात को तीन बजे बच्ची की मृत्यु हो गयी.

Adult-Non-Communicable Diseases

7. ग्राम - उषाढ, विकासखंड - मरवाही, जिला - बिलासपुर

दिनांक 22.10.15 को आशाराम पिता प्रेमलाल को तेज बुखार था, इतना बुखार था की आशाराम बेहोश हो गया था. मितानिन पार्वती नागेश 108 गाड़ी को फोन लगायी परन्तु गाड़ी दुसरे गाँव गयी थी इस वजह से नहीं आ पाई. मितानिन स्वयं के साधन से आशाराम को रात में सी.एच.सी. मरवाही ले गयी. मितानिन ने मरीज का स्मार्ट कार्ड भी रख लिया था. सी.एच.सी. में कोई डॉक्टर नहीं था तो ड्यूटी में उपस्तिथ सिस्टर ने कहा कि रात के समय ऐसे मरीज को लेकर क्यों आए हो, आज दशहरा है छुट्टी का दिन, स्मार्ट कार्ड से यहाँ दवाई व् इलाज कौन देगा. इतना कहकर सिस्टर ने दवाई का नाम लिखकर दे दिया और कहा बाहर से खरीद कर ले आओं. मरीज के घर वाले बाहर से दवाई खरीदकर ले आए और फिर मरीज का इलाज चालू हुआ. मरीज को इलाज के दौरान खाना भी नहीं दिया गया.

शशि कैवर्त

एस.पी.एस.

Negligence by staff

Case Studies-9

1. ग्राम - छुरीडबरी, विकासखंड - बागबाहरा, जिला - महासमुंद

गाँव की मितानिन एक गर्भवती महिला को प्रसव के लिए उपस्वास्थ्य केंद्र हाथी बाहरा ले कर गयी हालाँकि गर्भवती के घरवाले घर प्रसव करवाना चाहते थे. परन्तु मितानिन ने उन्हें अस्पताल में प्रसव करवाने के लिए समझाया तो वे मान गए. हाथी बाहरा में गर्भवती के शरीर में खून की कमी है कहकर 102 गाड़ी से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बागबाहरा रेफर किया गया . बागबाहरा से भी जिला अस्पताल महासमुंद रेफर कर दिया गया. जिला असपताल जाने के बाद गर्भवती का प्रसव हो गया. प्रसव के बाद महिला की गंभीर स्तिथि को देखते हुए उसे मेकाहारा रेफर कर दिया गया. मेकाहारा जाते समय रास्ते में ही बच्चे की मृत्यु हो गयी. मेकाहारा पहुचने पर मेकाहारा की ए.एन.एम्. के दवारा मितानिन को मारने के लिए हाथ उठाया गया और गंभीर केस को यहाँ क्यूँ लाते हो कहकर गली गलौच भी की गयी. मितानिन ने कुछ नहीं कहा. महिला का इलाज शुरू हुआ और दो बाटल खून चढ़ाया गया. मितानिन दुसरे दिन अपने घर चली गयी और महिला की छुट्टी 5 दिन के बाद कर दी गयी.

लक्ष्मीं सोनवानी - मितानिन प्रशिक्षक,
काँटी सिन्हा - एस.पी.एस.
8889133489

Case Studies No-1

ग्राम कोड़ोहरदी ग्राम पंचायत दसपुर, तहसील व जिला गरियाबंद की मितानिन श्रीमति जगीता बाई के द्वारा गर्भवती माता हेमबाई, पति विष्णु, ग्राम सातधार निवासी को प्रसव पीड़ा होने पर जिला अस्पताल गरियाबंद लाया गया। जिला अस्पताल मे जांच कर गर्भवती माता को डॉ0 के द्वारा मेकाहारा अस्पताल रेफर कर दिया गया। मेकाहारा में डियूटी में उपस्थित ए.एन.एम. के द्वारा गर्भवती और मितानिन के साथ अभद्र व्यवहार किया गया और मारपीट भी की गयी। इसके साथ ही साथ ए.एन.एम. के द्वारा मितानिन को फांसी पर लटकाने की बात कही गई। दिनांक 22.05.2016 को गर्भवती माता के द्वारा मृत बच्चा को जन्म दिया गया तथा 25.05.2016 को शिशुवती माता की भी मृत्यु हो गई।

जगीता–मितानिन

NEGLIGENCE – 21

7. ग्राम - देवरी, विकासखंड - धरसींवा, जिला - रायपुर

दिनांक 7.06.16 को रामशिला मितानिन लिलौतिन साहू को शाम 7 बजे 102 गाड़ी से प्रसव के लिए सामुदायिक स्वस्थ्य केंद्र धरसींवा लेकर गयी थी. प्रसूता की स्तिथि ख़राब होने पर रात 1 बजे उसे मेकाहारा रेफर कर दिया गया और 102 गाड़ी में मेकाहारा पहुचांया गया. प्रसूता को प्रसव कक्ष में लेजाया गया पर साथ में किसी को भी जाने नहीं दिया गया. मितानिन साथ में जाने लगी तो कहा गया कि हम किसी मितानिन को नहीं जानते, प्रसूता की नानी को तो आया ने थप्पड़ मारा और धक्का मर दिया. प्रसूता की नानी बहुत डर गयी थी. प्रसव के पश्चात् मितानिन झगडा कर अन्दर गयी तो देखा प्रसूता का बहुत खून बह रहा है. मितानिन ने आया से प्रसूता को तुरंत कपडा लगाने कहा ताकि खून को रोका जा सके. आया ने मितानिन के कहने के बाद प्रसूता के खून रोकने की व्यवस्था की.

रमशीला वर्मा

मितानिन

Poor service provided by hospital

राशि लिया गया

Case Studies No-13

1. ग्राम - सरबदा, विकासखंड - कुरूद, जिला - धमतरी

दिनांक 27.09.16 को 12 बजे रात को हेमिन पति सुरेन्द्र ध्रुव को प्रसव पीड़ा होने पर मितानिन को बुलाया गया और मितानिन हेमिन को उपस्वास्थ्य केंद्र ले गयी. ए.एन.एम्. ने हेमिन की जाँच की और बोली अभी समय है सुबह लेकर आना. मितानिन हेमिन को लेकर घर आ गयी. कुछ देर बाद हेमिन को दर्द बड़ा तो हेमिन ने 102 को फोन कर बुलाया और भखारा पी.एच.सी. ले कर गयी. पी.एच.सी. में नर्स ड्यूटी पर नहीं थी केवल एक चपरासी ड्यूटी पर था. चपरासी ने मितानिन से कहा कि नर्स को फोन करके बुला लो. मितानिन ने नर्स को फोन करके बुलाया र नर्स आई और हेमिन का प्रसव करवायी और हेमिन के घरवालों से 500 रुपए ली और फिर से मरीज को चपरासी के हवाले अकेले छोड़ कर चली गयी. कुछ समय बाद बच्चा बहुत रोने लगा तो मितानिन ने फिर से नर्स को फोन करके बुलाया परन्तु नर्स नहीं आयी. मितानिन ने फिर बच्चे को माँ के साइन से चिपका कर रख दिया.

कुसुम बाई - मितानिन, लोकेश्वरी साहू - मितानिन प्रशिक्षक

Case Studies No-14

2. ग्राम पंचायत - कठौली, विकासखंड - कुरूद, जिला - धमतरी

दिनांक 24.08.16 को मितानिन सारिका साहू और कुमारी साहू ने गाँव के खेमिन पति कार्तिक विश्वकर्मा, गोमती पति टीकम विश्वकर्मा और धामिन पति केवल निषाद को नसबंदी कराने के लिए अभनपुर अस्पताल ले कर गयी थी. नसबंदी कराने के बाद सभी हितग्राही 102 गाड़ी से मितानिन के साथ घर वापस आ रहे थे तब 102 गाड़ी चालक के दवारा उनसे बार-बार पैसे की मांग की जा रही थी. मितानिन के कहा भी की यह सरकारी गाड़ी है इसमें पैसा नहीं लगता है तो चाय नाश्ते के नाम पर 102 गाड़ी वाले हितग्राहियों से पैसे की मांग करने लगे. घर पहुँचने पर दो हितग्राही मिलकर 102 चालक को 100 रुपए दिए और दुसरे हितग्राही धामिन और केवल निषाद को गाँव में ही आगे तक छोड़ने पर उनके दवारा 50 रुपए दिए जाने पर गाड़ी चालक ने 50 रुपए दे रहे है कहकर नहीं लिए और उन्हें छोड़कर चले गए.

डिगेश्वर साहू - मितानिन प्रशिक्षक

Case Study – 6

1. ग्राम - टकटोइया, विकासखंड - पंडरिया, जिला - कवर्धा

दिनांक 4.10.15 को रात 3 बजे संतोषी का प्रसव उपस्वास्थ्य केंद्र कोदवा गोडान में हुआ था. जिसमे जुड़वाँ बच्चो का जन्म हुआ था. जन्म के समय बच्चो का वजन 1 किलो 500 ग्राम था. ए.एन. एम्. ने प्रसव के बाद बच्चो की तबियत को देखते हुए माँ और बच्चो को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पंडरिया रेफर कर दिया. उपस्वास्थ्य केंद्र से 102 गाड़ी से संतोषी और बच्चो को भेजा गया. 102 गाड़ी वाले ने थोड़ी दूर चलने के बाद नदी किनारे गाड़ी रोकी और संतोषी के परिवार वालो से गाड़ी में पेट्रोल नहीं है कहकर 500 रुपए मांगने लगा. परिवार वालो के पास इलाज के लिए केवल 500 रुपए थे परन्तु गाड़ी वाले ने धमकी देकर उनसे 500 रुपए ले लिए और फिर जिला अस्पताल लेकर गए. जिला अस्पताल में तीन दिन इलाज चला और फिर उनकी छुट्टी हो गयी.

नेमिन साहू

Purchasing drugs etc from out side hospital

Case Studies -03

1. ग्राम - थरहीडीही, उपस्वास्थ्य केंद्र - मल्दा, विकासखंड - बिलाईगढ़, जिला - बलोदाबाज़ार दिनांक 23.07.16 को सब सेंटर मल्दा में ममता मांझी पति रमेश मांझी जाँच करने गयी थी. उपस्वास्थ्य केंद्र की ए.एन.एम्. महेश्वरी साहू जो की अपने पति के साथ वहीं रहती है ने ममता की जाँच की और प्रसव करायी और कुछ दवाइयां बाहर से खरीद के लाने के लिए कही. ममता का पति बाहर से दवा लेने गया तो ए.एन.एम्. के पति ने 1500 रुपए की दवा ममता के पति को दी.

Child Death

Case Studies No-25

ग्राम - भैसमुंडी, नगर पंचायत - भैसमुंडी, विकासखंड -मगरलोड, जिला - धमतरी

14 वर्षीय देवानंद पिता का नाम प्रीतम को कुछ दिनों से बुखार था और दिनांक 28.08.16 को खून जाँच के लिए सी.एच.सी. गए. सी.एच.सी. में डॉक्टर ने देवानंद को देखा और खून जाँच के लिए बोला. खून जाँच करने के बाद रिपोर्ट आधे घंटे में मिलेगी कहा गया. देवानंद और घरवाले 4 बजे तक बैठे रहे परन्तु उन्हें रिपोर्ट नहीं मिली और दुसरे दिन आने कहा गया. दुसरे दिन देवानंद की तबियत और ज्यादा ख़राब हो गयी तो घरवाले देवानानद को सी.एसच.सी ले कर गए. सी.एच.सी. में बिना खून जाँच का रिपोर्ट देखे देवानंद की स्तिथि को देखते हुए बाटल चढ़ायी गयी. बाटल चढ़ने के बाद देवानंद को थोड़ा अच्छा लगने लगा तो देवानंद को घर ले कर आ गए. घर आने के 1 घंटे बाद फिर से देवानंद की तबियत ख़राब हो गयी तो फिर से उसे सी.एच.सी ले कर गए. सी.एच.सी. में देवानंद को बाटल चढ़ाया गया और बर्फ से रगड़ने कहा गया. देवानंद की स्तिथि में कोई सुधार नहीं हुआ तो उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया. जिला अस्पताल ले जाने गाड़ी नहीं मिली तो निजी गाड़ी से शाम को 6 बजकर 30 मिनट पर जिला अस्पताल पहुंचे. जिला अस्पताल में पहुँचते ही देवानंद की गंभीर स्तिथि को देखते हुए बाटल चढ़ाया गया और बाहर से इंजेक्शन मंगवाकर लगाया गया. देवानंद को एक दिन जिला अस्पताल में रखा गया उसके बाद स्तिथि में कोई सुधार नहीं होते देख उसे मेकाहारा रेफर कर दिया गया. मेकाहारा ले जाने के लिए 108 गाड़ी नहीं मिली तो उसे एम्ब्युलेंस से मेकाहारा लेजाया गया. मेकाहारा में देवानंद 6 दिनों तक भर्ती रहा और इलाज के दौरान 3.09.16 को उसकी मृत्यु हो गयी.

Still Birth

Case Studies No-10

1. ग्राम - सोठी, विकासखंड - सक्ती, जिला - जांजगीर चांपा

दिनांक 9.10.16 को गाँव की अमरीका बाई पति कुमार यादव उम्र 23 वर्ष को रात को 3 बजे प्रसव पीड़ा शुरू हुयी. मितानिन कचरा यादव ने 102 गाड़ी को बुलाकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सकती ले गयी. सी.एच.सी. में ड्यूटी में उपस्थित स्टाफ नर्स को अमरीका को देखने कहा गया. नर्स ने अमरीका को नहीं देखा और आया को देखने बोल दी. आया ने सुबह 7 बजे प्रसव होगा कहा गया और वहां से चली गयी. सुबह 7 बजे मितानिन ने फिर से नर्स को बुलाया तब नर्स आई और डॉक्टर को बुलाने बोली. डॉक्टर ने आ कर जाँच की और रेफर पर्ची बना दी. 102 गाड़ी व्यस्त होने के कारण 108 से अमरीका को चांपा ले जाया गया. चांपा में सामान्य प्रसव हुआ और एक मृत बच्चे का जन्म हुआ.

रजनी राठौर - स्वस्थ पंचायत समन्वयक 7805014312